Mahila College Dalmianagar
Department of History
B.A III (Hons)

Dr. Anu Kumari
Date: 19/02/2024

Topic: शेरशाह का उत्कर्ष

शेरशाह का जन्म 1486 ई॰ में हिसार फिरोजा के नारनौल नामक स्थान में हुआ। शेरशाह के पिता का नाम हसन खाँ और दादा का नाम इब्राहिम सूर था। शेरशाह के बचपन का नाम फरीद था।

1529 ई॰ में शेर खाँ ने महमूद लोदी की ओर से मुगलों के विरुद्ध घाघरा के युद्ध में भाग लिया था। इसने 1529 ई॰ में नुसरत शाह को पराजित किया। तत्पश्चात् शेर खाँ ने हजरत-ए-आला की उपाधि धारण की।

1530 ई॰ में चुनार दुर्ग के शासक ताज खाँ की विधवा लाड मलिका से विवाह कर लिया। इस विवाह से शेर खाँ को चुनार के दुर्ग के साथ-साथ 150 बहुमूल्य रत्न 7 मन मोती और 150 मन सोना प्राप्त हुआ। इसी प्रकार शेर खाँ ने गाजीपुर के नासिर खाँ नुहानी की विधवा पत्नी गौहर हुसैन से विवाह करने के उपलक्ष्य में 30 मन सोना प्राप्त किया। इसी प्रकार बीबी फतेह मलिका से भी शेर खाँ को 30 मन सोना प्राप्त हुआ।

शेर खाँ ने दौराह युद्ध में महमूद लोदी को साथ दिया था। दौराह युद्ध के पश्चात हुमायूँ ने चुनार के दुर्ग पर आक्रमण करने के लिए हिन्दू बेग को भेजा। शेर खाँ ने हुमायूँ की अधीनता स्वीकार कर ली और अपने पुत्र कुतुब खाँ को चार सौ सवारों के साथ हुमायूँ की सेवा में भेज दिया। बदले में हुमायूँ ने चुनार के दुर्ग पर शेर खाँ के अधिपत्य को मान्यता दे दी।

1534 ई० में शेर खाँ ने सूरजगढ़ के युद्ध में बंगाल के शासक महमूदशाह को पराजित किया। तत्पश्चात, पुनः महमूदशाह पर आक्रमण किया। महमूदशाह ने 13 लाख स्वर्ण मुद्रा देकर शेर खाँ से संधि कर ली। इसके बाद पुनः अभियान किया और बंगाल को अधिपत्य में ले लिया।

शेरशाह ने एक विशाल साम्राज्य का निर्माण किया था। इसका साम्राज्य पूरब में बंगाल से लेकर पश्चिम में सिन्धु नदी तक था परन्तु उसे उत्तराधिकारियों की अयोग्यता के कारण उसका साम्राज्य अल्पायी सिद्ध हुआ।

Scanned with CamScanner